International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

फिरोजाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन''

डॉ. अबधेश सिंह

एफ. एस. वि. वि. शिकोहाबाद

सारांश – प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक स्थिरता का लिंग के आधार पर पता लगाने का प्रयास किया गया है। इस हेतु फिरोजाबाद जिले के माध्यमिक स्तर के 70 विद्यार्थियों पर शोध उपकरणों के रूप में श्री अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित मेन्टल हैल्थ बैटरी का उपयोग किया। आँकड़ों का विश्लेषण के उपरान्त पाया कि छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक स्थिरता का मध्यमान छात्राओं की तुलना में कम है अर्थात छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक स्थिरता पर छात्राओं की तुलना में कम प्रभाव पडता है।

कुंजी शब्द :–माध्यमिक स्तर, मानसिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक स्थिरता।

प्रस्तावना–

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं उनके संगठनों/इकाइयों ने माना है कि अनेक मानसिक रोगों के उपचार में मनोविज्ञान का ज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मनोविज्ञान के अनुसार जब कोई व्यक्ति किसी तरह की मानसिक बीमारी से ग्रसित नहीं होता है तो उसे मानसिक रूप से स्वस्थ समझा जाता है और उसकी इस अवस्था को मानसिक स्वास्थ्य की संज्ञा दी जाती है। मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययन में विशेष रूप से मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण/परीक्षण के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य की जांच पड़ताल करने हेतु प्रयास किये जाते रहे हैं।

स्टेन्ज (1965) ने कहा है कि सीखे गये व्यवहार से जो सामाजिक रूप से अनुकूल और व्यक्ति को अपनी जिन्दगी के साथ मुकाबला करने की अनुमति देता हो मानसिक स्वास्थ्य है।

हारबीज एवं स्कीड़ ने मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न आयामों जैसे – आत्मसम्मान, अन्तःशक्तियों का अनुभव, सार्थक एवं उत्तम सम्बन्ध बनाये रखने की क्षमता तथा मनोवैज्ञानिक श्रेष्ठता सम्मिलित की है। मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति का एक ऐसा अर्जित व्यवहार है जिसके माध्यम से व्यक्ति को सभी तरह के व्यवहारों का समायोजन करने में मदद मिलती है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक–शिक्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की जांच–पड़ताल आवश्यक रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

डेविड मेकानिक (1999) ने मानसिक रूप से स्वस्थ न होने को मानसिक बीमारी का नाम दिया है। यह एक तरह का विचलित व्यवहार है जिसमें व्यक्ति की चिन्तन प्रक्रियाएं, भाव व्यवहार, सामान्य प्रत्याशाओं एवं अनुभूतियों से भिन्न या अलग होता है। शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत सीखने एवं सिखाने के साथ–साथ अधिगमकर्ता, शिक्षक, शिक्षार्थी आदि भी किसी न किसी रूप से मानसिक बीमारी के प्रभाव में कम या अधिक रूप से ग्रसित रहते हैं।

मानसिक बीमारी एक भिन्न प्रकार का रोग न होकर स्वास्थ्य तथा मानसिक संबंधी रोग और सामान्य तथा असामान्य व्यवहारों की विभिन्न प्रकार का रोग है, जिनके बीच एक स्पर्श सीमा रेखा खींचना कठिन है। समाज में ऐसे व्यक्ति जिनमें कोई मानसिक बीमारी नहीं होती कभी–कभी उनमें भी मानसिक विषाद, काल्पनिक बीमारियों से चिन्तित रहना, आवेगशीलता, बिना बात कहे क्रोध आ जाना आदि लक्षण पाये जाते हैं। ठीक ऐसे ही लोग जो निश्चित रूप से मानसिक रोगग्रस्त हैं इनमें कभी–कभी ऐसी दशा उत्पन्न हो जाती है यही स्थिति शिक्षा में परिलक्षित होती है जिसमें शिक्षक–शिक्षार्थी के साथ–साथ अन्य व्यक्ति भी मानसिक बीमारी से प्रभावित पाये जाते हैं। प्रस्तुत शोध में स्वस्थ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का पता लगाने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य–

- माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का पता लगाना।
- माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का लिंग के आधार पर अध्ययन करना।

समस्या कथन–

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में संवेगात्मक स्थिरता में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.4 समस्या का परिसीमन

प्रस्तुत शोध फिरोजाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11 एवं कक्षा 12 के 35–35 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में शामिल किया गया हैं।

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक स्थिरता में समायोजन तक ही सीमित रखा गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

उपकरणों का चयन

शोधार्थी ने अध्ययन हेतु मानसिक स्वास्थ्य के पक्ष को जानने हेतु शोध उपकरणों के रूप में श्री अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित मेन्टल हैल्थ बैटरी का उपयोग किया।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' का मान

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	Df	t	सार्थकता स्तर
छात्र	35	78.12	9.04	68	4.7	0.01 स्तर पर सार्थक
छात्राएं	35	87.93	9.08			

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि स्वतन्त्रता की कोटि df 68 पर सार्थकता स्तर के लिए t सारणी के अनुसार 0.05 सार्थकता के स्तर पर t का मान 2.00 तथा 0.01 के विश्वास स्तर पर t का मान 2.65 है जबकि परिगणित मान 4.7 है जो df 68 के सार्थकता 0.01 के सारणी मान से अधिक है, जो यह इंगित करता है कि परिकल्पना 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। अतएव परिकल्पना –1 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। तालिका –1 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान 78.12 जबकि छात्राओं का मध्यमान 87.93 है। अतः कहा जा सकता है कि छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान छात्राओं की तुलना में कम है।

इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्र विद्यालय के माहौल में समायोजन नहीं कर पाते। साथ ही यह भी हो सकता है कि इन विद्यालयों के प्रशासन एवं प्रबन्धन में विद्यार्थियों को बाध्य किया जाता है। ऐसी स्थिति उस समय भी हो सकती है जब इन संस्थाओं में ऐसे विद्यार्थी प्रवेश ले लें जिनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति उपयुक्त न हो। ऐसा शैक्षिक माहौल के कारण भी हो सकता है। इन संस्थाओं में अन्य दूसरे प्रकार के दबाव से विद्यार्थियों में मानसिक निराशा और कुन्ठा, अशान्ति, बेचैनी हो सकती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

परिकल्पना– 2 का परीक्षण

परिकल्पना – 2 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में संवेगात्मक स्थिरता में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। नामक परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के प्राप्तांकों के मध्यमान तथा मानक विचलन ज्ञात किये गये तथा तुलना करने के लिए 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया। 'टी' परीक्षण के परिणाम अग्रांकित सारणी में दिये गये हैं –

तालिका–2

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में संवेगात्मक स्थिरता में लिंग के आधार पर मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' का मान

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	T	सार्थकता स्तर
छात्र	35	11.12	2.05	68	18.22	0.01 स्तर पर सार्थक
छात्राएं	35	19.29	1.78			

उपरोक्त तालिका –2 से स्पष्ट है कि स्वतन्त्रता की कोटि df 68 पर सार्थकता स्तर के लिए t सारणी के अनुसार 0.05 सार्थकता के स्तर पर t का मान 2.02 तथा 0.01 के विश्वास स्तर पर t का मान 2.65 है जबकि परिगणित मान 18.22 है अतएव परिकल्पना –2 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में संवेगात्मक स्थिरता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है।स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान 11.12 है। अतः कहा जा सकता है कि छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में संवेगात्मक स्थिरता छात्राओं की तुलना में कम है।

इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कुछ छात्र स्वयं को समायोजित नहीं कर पाते, इसका कारण यह भी हो सकता है कि यह स्थिति उनकी आकांक्षाओं, प्रेरणा, इच्छा तथा भावों को प्रोत्साहन न मिलने के कारण हो। इन संस्थाओं में मुख्य रूप से संसाधनों की कमी के कारण भी छात्र समायोजन नही कर पाते हों

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 10 Oct- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ऐसे में छात्र इन संस्थाओं में असमायोजन की भावना से ग्रसित पाये जाते है। इसके साथ ही धनाभाव में अतिसंवेदनशीलता उत्पन्न हो जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इन संस्थाओं में छात्रों के मुकाबले छात्राओं को कम असमायोजन मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। छात्र इन संस्थाओं में दबाव पड़ने के बावजूद भी अपनी इच्छाओं को दमित नहीं कर पाते।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कपिल एच0 के0–सांख्यिकीय के मूल तत्व, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन कचहरी घाट, आगरा।

गुप्ता एस0 पी0 एवं गुप्ता अलका–स्टेटिस्टकल मैथड इन विहेवियरल साइंस, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

भटनागर सुरेश–शिक्षा मनोविज्ञान, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ।

भटनागर आर0 पी0 एवं मीनाक्षी–शिक्षा अनुसन्धान, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस,मेरठ।

माथुर एस0 एस0एवं अन्जू–स्वास्थ्य मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

भाटिया टी0 –आधुनिक मनोवैज्ञानिक सांख्यिकीय, लावण्या प्रकाशन उरई।

श्रीवास्तव डी0 एन0 –अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आगरा।